आत्मकथ्य (जयशंकर प्रसाद)

पाठ का परिचय

मुंशी प्रेमचंद के संपादकत्व में 'हंस' पत्रिका का आत्मकथा विशेषांक निकलना तय हुआ। इसके लिए जयशंकर प्रसाद के मित्रों ने भी उनसे आग्रह किया कि वे भी पत्रिका के लिए अपनी आत्मकथा लिखें। प्रसाद जी आत्मकथा लिखने के लिए तैयार न थे। मित्रों के साथ इसी तर्क-वितर्क के परिणामस्वरूप इस कविता का जन्म हुआ। **'आत्मकथ्य'** शीर्षक वाली यह कविता सन् 1932 में हंस के आत्मकथा विशेषांक में प्रकाशित हुई। छायावादी शैली में रचित इस कविता में कवि ने अपने जीवन के अभावपूर्ण यथार्थ की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। ललित, सुंदर और गूढ़ अर्थों को अपने में समाहित करने वाली नूतन शब्दावली और बिंबों के सहारे उन्होंने स्पष्ट किया है कि उनकी जीवन-कथा में कोई ऐसी विशेषता नहीं है, जिसका उल्लेख किया जा सके। उनकी जीवनगाथा एक साधारण-सामान्य व्यक्ति जैसी ही साधारण है। इसे पढ़कर कोई भी वाह-वाह नहीं करेगा। मेरी आत्मकथा के स्थान पर वास्तव में किसी महान् व्यक्ति की आत्मकथा को पत्रिका में स्थान मिलना चाहिए। इस प्रकार प्रस्तुत कविता में कवि ने जहाँ अपनी निरभिमानिता का परिचय दिया है, वहीं अपनी विनम्रता को भी प्रस्तुत किया है।

कविताओं का भावार्थ

आत्मकथ्य

(1) मधुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास
तब भी कहते हो–कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे–यह गागर रीती।

भावार्थ–कवि जयशंकर प्रसाद की पंक्तियाँ 'आत्मकथ्य' शीर्षक नामक कविता से अवतरित हैं। प्रेमचंद जी के संपादन में 'हंस' (पत्रिका) का एक आत्मकथा विशेषांक निकलना तय हुआ। प्रसाद जी के मित्रों ने आग्रह किया कि वे भी आत्मकथा लिखें। प्रसाद जी इससे सहमत नहीं थे। इसी असहमति के तर्क से उत्पन्न हुई कविता है–आत्मकथ्य।

कवि कहता है कि मनरूपी भँवरा गुनगुन करता हुआ न जाने कौन-सी कहानी मुझसे कहता रहता है। मैं जब भी अपने विगत जीवन पर दृष्टिपात करता हूँ तो मुझे अपने जीवनरूपी वृक्ष से स्मृतियों की मुरझाई पत्तियाँ गिरती प्रतीत होती हैं। अर्थात् मुझे विगत जीवन की दुःख और निराशा से परिपूर्ण यादें पुनः ताजा हो आती हैं। मेरे गंभीर हृदयरूपी स्वच्छ और नीले आकाश का विस्तार अनंत है, जिसमें मेरे अनगिनत परिचितों-अपरिचितों की जीवन-गाथाएँ आत्मकथ्य के रूप में अंकित हैं। जब मैं इन आत्मकथ्यों का मनन करता हूँ तो वे सब मुझे मुँह चिढ़ाते, उलाहना देते प्रतीत होते हैं, मानो वे मुझसे कहते हैं कि यह सब जो अप्रिय घटित हुआ है उसके लिए तुम्हीं उत्तरदायी हो। इस प्रकार आत्मकथ्यों को लिखना स्वयं पर हँसने जैसा है और मुझमें स्वयं पर हँसने का साहस नहीं है। फिर अपनी दुर्बलताओं को दूसरों के सम्मुख प्रकट करने से किसी का कोई भला नहीं हो सकता; क्योंकि लोग उनको जानकर उनका लाभ उठाना चाहते हैं, वे हम पर हँसते हैं। इन सब बातों को भली-भाँति जानते हुए भी तुम मुझसे यही चाहते हो कि मैं आत्मकथ्य के रूप में अपनी दुर्बलताओं का उद्घाटन सबके सम्मुख करूँ। मेरी जीवनरूपी गागर बिलकुल खाली है, इसमें कुछ भी ऐसा नहीं है, जो उल्लेखनीय हो। यह सुनकर और देखकर तुम्हें भले ही सुख मिले कि मेरे अतीत-जीवन में उपलब्धि के नाम पर कुछ भी नहीं है, किंतु मुझे इससे अपार दुःख होगा। इसीलिए मैं आत्मकथ्य नहीं लिख सकता।

(2) किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले–
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।
यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

भावार्थ–कवि कहता है कि मेरी मनरूपी गागर, जो भावों से खाली पड़ी है, रिक्त है। कहीं तुम्हीं ने उसे खाली न किया हो? तुम स्वयं को समझो। तुमने मेरे विचारोंरूपी रस को लेकर अपनी गागर भर ली हो, अर्थात् अपने विचारों की समृद्धि कर ली हो। यह कैसी विडंबना है कि मेरे पास विचार नहीं हैं, जिनसे मैं अपना आत्मकथ्य लिख सकूँ। हे मेरे सरल मन! मैं आत्मकथ्य रचकर किस प्रकार तुम्हारी हँसी उड़ा सकता हूँ? मैं अपने जीवन की भूलें या गलतियाँ और धोखे किस प्रकार औरों को दिखला सकता हूँ। अर्थात् मेरा जीवन तो गलतियों और धोखों से भरा हुआ है, उसका किस प्रकार अपनी आत्मकथा में उल्लेख कर दूँ। मेरे जीवन में कुछ अच्छे दिन भी आए थे, मैं उनकी उज्ज्वल गाथा भी किस प्रकार कह सकता हूँ? कवि प्रसाद ने यहाँ उज्ज्वल दिनों की मधुर चाँदनी रातों से तुलना की है। कवि के अनुसार जीवन में खिलखिलाकर हँसते हुए की गई बातों की गाथा किस प्रकार कही जा सकती है।

कवि कहता है कि मैंने अपने जीवन में सुख का जो स्वप्न देखा था वह मुझे प्राप्त ही नहीं हुआ; अर्थात् मेरा जीवन तो सर्वथा अभावों से ही ग्रस्त रहा है। सुखी जीवन का स्वप्न तो मेरे पास आते-आते, मेरा आलिंगन करते-करते मुझसे दूर हो गया।

(3) जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।
उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।
सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?
छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा?
अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

भावार्थ–प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने अपनी प्रिया के सौंदर्य के माध्यम से प्रकृति के सौंदर्य का चित्रण किया है। कवि अपनी प्रेयसी की यादों में खोया हुआ कहता है कि मेरी प्रियतमा ऐसी अनुपम सुंदरी थी कि उसके लाल गालों की लालिमा से ही ऊषा ने लाली ग्रहण की थी, इसीलिए वह भी मेरी प्रिया के सौभाग्य को प्राप्त कर उसी के समान मधुर और मोहक बन गई थी। आशय यही है कि मेरी प्रियतमा ऊषा से भी अधिक सौंदर्यमयी और मोहक थी।

कवि आगे कहता है कि मेरी उसी प्रियतमा की यादें ही मेरी जीवन-यात्रा का संबल हैं। उन्हीं के सहारे मेरा जीवन व्यतीत हो रहा है। फिर तुम मेरी आत्मकथा लिखने के बहाने मेरी जीवन-गुदड़ी की सीवन उधेड़कर आखिर उसके भीतर क्या देखना चाहते हो। उसमें मेरी प्रियतमा की स्मृतियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है तथा मैं उन स्मृतियों को किसी के साथ बाँटना नहीं चाहता। वहाँ तुम्हें दुःख के अतिरिक्त और कुछ न मिलेगा। मेरे छोटे-से जीवन में अपनी प्रियतमा से संबंधित अनेक बड़ी-बड़ी व्यथा-कथाएँ निहित हैं। अब मैं अपने आत्मकथ्य के रूप में किसी से उनके विषय में क्या कहूँ अर्थात् मैं अपनी उन व्यथा-कथाओं को किसी से नहीं कहना चाहता। इससे अच्छा तो यह है कि मैं दूसरों की व्यथा-कथाएँ सुनकर उनके दुःख-दर्द को समझूँ और अपने विषय में चुप ही रहूँ।

अंततः कवि कहता है कि हे मित्रों! तुम मेरी भोली-भाली साधारण-सी व्यथा-कथा को सुनकर क्या करोगे? मेरी दृष्टि में अभी वह उपयुक्त समय नहीं आया है कि मैं अपनी आत्मकथा लिखूँ। प्रियतमा संबंधी मेरी मौन-पीड़ा अभी मेरे हृदय में सोई पड़ी है, उसे फिर से जगाकर मेरे हृदय की पीड़ा को तुम क्यों जगाना चाहते हो? आशय यही है कि मेरी आत्मकथा में तुम्हें पीड़ा, दुःख और अवसाद के अतिरिक्त अन्य कुछ न मिलेगा, इसीलिए मैं अपनी आत्मकथा नहीं लिखना चाहता।

इस प्रकार कवि ने बताया है कि उसके जीवन की कथा एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की कथा है। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे महान् और रोचक मानकर लोग वाह-वाह करेंगे। कुल मिलाकर इन पंक्तियों में एक ओर कवि द्वारा यथार्थ की स्वीकृति है तो दूसरी ओर एक महान् कवि की विनम्रता भी।

शब्दार्थ

मधुप = मनरूपी भौंरा। **अनंत-नीलिमा** = अंतहीन विस्तार। **व्यंग्य-मलिन** = खराब ढंग से। **गागर रीती** = खाली घड़ा। **प्रवंचना** = धोखा। **मुसक्या कर** = मुसकराकर। **अरुण-कपोल** = लाल गाल। **अनुरागिनी उषा** = प्रेम-भरी भोर। **स्मृति पाथेय** = स्मृतिरूपी संबल। **पंथा** = रास्ता। **कंथा** = गुदड़ी, अंतर्मन।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) मधुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।

इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास
तब भी कहते हो–कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे–यह गागर रीती।

1. **'मधुप' किसका प्रतीक है–**
   (क) मन का (ख) तन का
   (ग) जीवन का (घ) धन का।
2. **मधुप गुन-गुनाकर क्या करता है–**
   (क) कवि को गीत सुनाता है
   (ख) कवि को अपनी कहानी कहता है
   (ग) कवि से शिकायत करता है
   (घ) कवि की प्रशंसा करता है।
3. **'अनंत-नीलिमा' के साथ किस विशेष का प्रयोग किया गया है–**
   (क) विस्तृत (ख) उज्ज्वल
   (ग) गंभीर (घ) मधुर।
4. **अपना व्यंग्य-मलिन उपहास कौन करते रहते हैं–**
   (क) कवि गण (ख) मित्र गण
   (ग) समाज के लोग (घ) असंख्य जीवन-इतिहास।
5. **कवि की गागर कैसी है–**
   (क) भरी हुई है (ख) खाली है
   (ग) नई है (घ) पुरानी है।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

(2) यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

1. **'उज्ज्वल गाथा' का आशय है–**
   (क) सुखद बातें (ख) दुःखद बातें
   (ग) नीरस बातें (घ) कड़वी बातें।
2. **कवि किसकी उज्ज्वल गाथा गाने में असमर्थ है–**
   (क) अपने देश की (ख) अपने परिवार की
   (ग) अपने पूर्वजों की (घ) मधुर चाँदनी रातों की।
3. **कवि ने किसका स्वप्न देखा था–**
   (क) प्रिय-मिलन के सुख का
   (ख) धन-प्राप्ति के सुख का
   (ग) पुत्र-प्राप्ति के सुख का
   (घ) सफलता-प्राप्ति के सुख का।
4. **कवि के आलिंगन में आते-आते कौन भाग गया–**
   (क) पुत्र (ख) मित्र
   (ग) सुख (घ) भाई।
5. **कवि के अनुसार विडंबना क्या है–**
   (क) मित्रों का उपहास करना (ख) सरलता की हँसी उड़ाना
   (ग) मूर्खों की हँसी उड़ाना (घ) आत्मकथा न लिखना।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(3) जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।
उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।
सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?
छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा?
अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

1. **किसके कपोलों की बात की गई है–**
   (क) शिशु के (ख) प्रेमिका के
   (ग) मित्र के (घ) इनमें से कोई नहीं।
2. **प्रेमिका के कपोल कैसे थे–**
   (क) पीले (ख) लाल
   (ग) श्वेत (घ) गंदे।
3. **कवि ने अपनी प्रेमिका की स्मृति को क्या कहा है–**
   (क) कथा (ख) व्यथा
   (ग) जीवन-पथ का संबल (घ) पूँजी।
4. **कवि किसकी बड़ी कथाएँ कहने में असमर्थ है–**
   (क) अपने छोटे-से जीवन की
   (ख) अपने छोटे-से परिवार की
   (ग) अपने देश की
   (घ) अपने समाज की।
5. **कवि की मौन व्यथा किस स्थिति में है–**
   (क) जागी हुई है (ख) व्यग्र है
   (ग) थकी सोई है (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'आत्मकथ्य' कविता के कवि का नाम है–**
   (क) ऋतु राज (ख) जयशंकर प्रसाद
   (ग) मंगलेश डबराल (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'।
2. **जयशंकर प्रसाद का जन्म कब हुआ–**
   (क) सन् 1889 में (ख) सन् 1880 में
   (ग) सन् 1882 में (घ) सन् 1885 में।
3. **प्रसाद जी की रचना नहीं है–**
   (क) चित्रधार (ख) कामायनी
   (ग) अनामिका (घ) झरना।
4. **'आत्मकथ्य' कविता में किसकी अभिव्यक्ति है–**
   (क) प्राकृतिक सौंदर्य की (ख) यथार्थ जीवन की
   (ग) सामाजिक विषमता की (घ) देश प्रेम की।
5. **कौन गुन-गुनाकर अपनी कहानी कहता है–**
   (क) कवि (ख) मन-मधुप
   (ग) मित्र (घ) कथाकार।
6. **मुरझाकर क्या गिर रहा है–**
   (क) फूल (ख) पत्तियाँ
   (ग) कलियाँ (घ) घास।
7. **मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ किसकी प्रतीक हैं–**
   (क) खुशियों की (ख) उदासी की
   (ग) निराशाओं की (घ) इनमें से कोई नहीं।
8. **कवि अपने किस स्वभाव को दोष नहीं देना चाहते हैं–**
   (क) मधुर (ख) उग्र
   (ग) कोमल (घ) सरल।
9. **कवि का दांपत्य जीवन कैसा है–**
   (क) क्लेश रहित (ख) सुखी
   (ग) दुःखी (घ) इनमें से कोई नहीं।

10. कवि के जीवन के सारे दुःख-दर्द और अभाव अब कैसे हैं–
(क) मौन (ख) अधिक
(ग) कम (घ) इनमें से कोई नहीं।

11. कवि अपनी आत्मकथा लिखने के बजाय क्या करना चाहता है–
(क) रोना चाहता है
(ख) खुश रहना चाहता है
(ग) हँसना चाहता है
(घ) दूसरों की आत्मकथा सुनना चाहता है।

12. कवि के सरल स्वभाव के कारण किसने धोखा दिया है–
(क) प्रेमिका ने (ख) मित्रों ने
(ग) संबंधियों ने (घ) इनमें से कोई नहीं।

13. कविता में थका हुआ पथिक कौन है–
(क) कवि (ख) कवि के मित्र
(ग) कवि की प्रेमिका (घ) इनमें से कोई नहीं।

14. 'जीवन-इतिहास' का अर्थ है–
(क) आत्मकथा (ख) जीवन-दर्शन
(ग) जीवन-शैली (घ) जीवन का सार।

15. मित्रों ने प्रसाद जी से क्या अनुरोध किया–
(क) कविता लिखने का (ख) कहानी लिखने का
(ग) आत्मकथा लिखने का (घ) गीत सुनाने का।

16. सरलता की हँसी उड़ाना क्या है–
(क) मूर्खता (ख) प्रवंचना
(ग) महानता (घ) विडंबना।

17. कवि के लिए किसकी स्मृति पाथेय बनी है–
(क) पुत्री की (ख) पुत्र की
(ग) प्रेमिका की (घ) माता की।

18. आत्मकथाओं का संसार में क्या परिणाम हुआ है–
(क) उनकी प्रशंसा की गई है (ख) उनसे प्रेरणा ली गई है
(ग) उनका उपहास किया गया है (घ) इनमें से कोई नहीं।

19. कवि को अपनी आत्मकथाओं में क्या लिखना पड़ेगा–
(क) अपनी दुर्बलताएँ (ख) मित्रों की प्रवंचना
(ग) अपनी गोपनीय उज्ज्वल गाथा (घ) ये सभी।

20. 'कंथा' किसका प्रतीक है–
(क) सुंदर कथा का (ख) गुदड़ी का
(ग) अंतर्मन का (घ) चादर का।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (ख) **6.** (ख) **7.** (ग) **8.** (घ) **9.** (ग) **10.** (क) **11.** (घ) **12.** (ख) **13.** (क) **14.** (क) **15.** (ग) **16.** (घ) **17.** (ग) **18.** (ग) **19.** (घ) **20.** (ग)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है?
***अथवा* कवि जयशंकर प्रसाद 'आत्मकथ्य' कविता के माध्यम से आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते हैं?**

उत्तर : कवि के पास आत्मकथा न लिखने के अनेक कारण हैं, जिनकी वजह से वह आत्मकथा नहीं लिखना चाहता। कवि कहता है कि इस संसार में मुझसे भी अधिक योग्य लोग हैं, जिन्हें आत्मकथा लिखनी चाहिए। कवि का मानना है कि उसके जीवन में ऐसा कुछ विशेष नहीं है, जिसे आत्मकथा के रूप में लिखा जा सके, जिससे लोग प्रेरणा ले सकें। उसके जीवन में यदि कुछ है तो वह है अनंत दुःख और सुविस्तृत अवसाद, जिसका वर्णन वह अपनी आत्मकथा में करके अपना उपहास नहीं कराना चाहता। इसी कारण वह अपनी आत्मकथा लिखने से बचना चाहता है। जिन लोगों ने उनकी सरलता का लाभ उठाकर उन्हें ठगा है, उनकी प्रवंचना का वर्णन करने से भी वे बचना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त वे अपने सुखद प्रेम-प्रसंगों को भी दूसरों के साथ नहीं बाँटना चाहते हैं। यदि वे आत्मकथा लिखेंगे तो इनका उल्लेख करने से वे स्वयं को रोक नहीं पाएँगे और ऐसा वे करना नहीं चाहते।

प्रश्न 2 : आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' ऐसा कवि क्यों कहता है? ***(CBSE SQP 2023-24)***
***अथवा* कवि आत्मकथा कहने या लिखने के लिए समय को उपयुक्त क्यों नहीं मानते?**

उत्तर : आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में कवि कहता है कि अभी आत्मकथा सुनाने का उपयुक्त समय नहीं है। मेरा जीवन अत्यंत कष्टमय रहा है। मैं किसी प्रकार अपनी उन पीड़ाओं को थोड़ा भूल पाया हूँ, तुम आत्मकथा सुनाने की बात कहकर उन पीड़ाओं को पुनः जाग्रत करके मुझे क्यों कष्ट प्रदान करना चाहते हो। मेरी उन व्यथा-कथाओं को यदि मौन ही रहने दो तो अच्छा है।

प्रश्न 3 : स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?
***अथवा* 'आत्मकथ्य' से उद्धृत निम्नलिखित काव्य-पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए–**
''उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।'' ***(CBSE 2023)***

उत्तर : कवि जीवनरूपी यात्रा में स्वयं को अत्यधिक थका हुआ अनुभव करता है। इसलिए उसके पास स्मृतियों का ही एकमात्र संबल है, जिसके माध्यम से वह जीवन में आगे का रास्ता तय करेगा। स्मृति को पाथेय बनाने से यहाँ आशय यही है कि जीवन की मधुर स्मृतियाँ व्यक्ति को जीवन की विषम परिस्थितियों में उसका संबल और प्रेरणा बनकर उसे अबाध रूप से आगे बढ़ते रहने के लिए उत्साहित करती रहती हैं। ये स्मृतियाँ उसके लिए उसी प्रकार महत्त्वपूर्ण और उपयोगी हैं, जिस प्रकार निरंतर चलते जाने से पथिक की शक्ति जब क्षीण हो जाती है और उसका शरीर शिथिल होने लगता है, तब पाथेय उसे नवस्फूर्ति और शक्ति प्रदान कर उसकी आगे की यात्रा को पूर्ण कराने में सफल होता है।

प्रश्न 4 : छायावाद से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में लिखिए। ***(CBSE 2016)***

उत्तर: जयशंकर प्रसाद छायावाद के जनक हैं। उन्होंने सर्वप्रथम अपने काव्य में छायावादी विशेषताओं को स्थान दिया।

दविवेदी युग के बाद की कविता को छायावाद नाम दिया गया है। इस कविता में प्रकृति के माध्यम से ईश्वरीय सत्ता का वर्णन किया गया है। अर्थात् प्रकृति में उस अव्यक्त सत्ता की छाया को प्रतिबिंबित किया गया है। वैसे छायावाद का अर्थ उस नवीन काव्यधारा से है, जिसमें परंपरागत मान्यताओं की उपेक्षा करके प्रेम और सौंदर्य के गीत नवीन शैली में लिखे गए तथा जिसमें कल्पना, भावुकता, लाक्षणिकता, चित्रात्मकता व ध्वन्यात्मकता आदि की प्रधानता थी। छायावाद को स्वयं छायावादी कवियों ने भी पृथक्-पृथक् दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है, जिसको स्वयं प्रसाद एवं महादेवी वर्मा के शब्दों में इस प्रकार जाना जा सकता है–

प्रसाद के शब्दों में—''वेदना और स्वानुभूति से युक्त काव्य छायावाद है।''

महादेवी वर्मा के अनुसार—''छायावाद का मूलदर्शन सर्वात्मवाद है।''

छायावाद को स्वच्छंदतावादी और रोमांटिक कविता भी कहा जाता है।

प्रश्न 5 : 'इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास' इस काव्य-पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

(CBSE 2016)

उत्तर : 'इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास' इस काव्य-पंक्ति के माध्यम से कवि प्रसाद यह कहना चाहते हैं कि मेरी आत्मकथा में ऐसा कुछ प्रेरणादायक नहीं है, जिसे लिखकर लोगों के सम्मुख लाया जाए। आज आवश्यकता उन असंख्य लोगों की कथा लिखे जाने की है, जिन्होंने अपने जीवन को देश-जाति और मानवता के लिए बलिदान कर दिया। यदि उनके जीवन-इतिहास को लिखकर संसार के सामने लाया जाए तो इससे मानवता का निश्चय ही कुछ कल्याण होगा: क्योंकि कोई तो उनके जीवन से प्रेरणा लेकर उनका अनुसरण करेगा और देश-जाति तथा मानवता को एक नई दिशा देकर उसे उपकृत करेगा।

प्रश्न 6 : निम्नलिखित पंक्तियों में निहित काव्य-सौंदर्य (सौंदर्य सराहना) स्पष्ट कीजिए–

उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिलाकर हँसते होने वाली उन बातों की।।

(CBSE 2016)

उत्तर : भाव-सौंदर्य–इन पंक्तियों में कवि ने चाँदनी रातों में होने वाली आनंदपूर्ण बातों का उल्लेख किया है। कवि ने चाँदनी रात को मधुर बताकर उसके सौंदर्य को और अधिक आकर्षक बना दिया है। खिल-खिलाकर हँसते हुए होने वाली बात कहकर कवि ने प्रेमपूर्ण वार्तालाप की रसमयता का संकेत किया है। कवि ने चाँदनी रातों में प्रेयसी से होने वाली रसमय बातों को उज्ज्वल गाथा कहकर यह स्पष्ट कर दिया है कि वे क्षण उसके जीवन की सर्वोत्तम स्मृति के रूप में अंकित हैं।

शिल्प-सौंदर्य–इन पंक्तियों में शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली का रूप प्रयुक्त हुआ है। 'हँसते होने' में अनुप्रास अलंकार की छटा है। 'खिल-खिला' में भी अनुप्रास अलंकार है। पंक्तियों के द्वारा कवि ने चाँदनी रात में प्रेमी युगल के स्नेहपूर्ण वार्तालाप का चित्रात्मक वर्णन किया है। इन पंक्तियों में ध्वन्यात्मकता का गुण दर्शनीय है।

प्रश्न 7 : प्रसाद जी ने अपनी कविता का शीर्षक 'आत्मकथा' न लिखकर 'आत्मकथ्य' क्यों रखा है?

उत्तर : आत्मकथा में जीवन के आरंभ से लेकर लिखने के समय तक का वर्णन होता है। आत्मकथ्य का अर्थ है–अपने विषय में कहने योग्य। प्रस्तुत कविता में कवि ने अपना संपूर्ण जीवन वृत्तांत न कहकर, अपने जीवन के विषय में बहुत संक्षेप में उन्हीं पक्षों को स्पष्ट किया है, जिन्हें वह कहने योग्य समझता है। आत्मकथ्य में रचनाकार को अपने जीवन से संबंधित दी जाने वाली जानकारी का चयन करने की सुविधा प्राप्त रहती है, जबकि आत्मकथा में उसके चयन की सुविधा बहुत सीमित होती है। इसलिए इस कविता का शीर्षक आत्मकथा के स्थान पर 'आत्मकथ्य' रखा गया है।

प्रश्न 8 : प्रसाद जी 'आत्मकथ्य' में संकोच के शिकार क्यों हैं?

उत्तर : प्रसाद जी 'आत्मकथ्य' में संकोच के शिकार इसलिए हैं; क्योंकि उनका जीवन अभावग्रस्त रहा है, जिसका उल्लेख वह दूसरों के सम्मुख नहीं करना चाहते। इसके अतिरिक्त उनके जीवन में ऐसा कुछ नहीं है, जिससे लोग प्रेरणा ले सकें और यदि उन्होंने आत्मकथा लिखी तो दुनिया उनके भोलेपन, निष्कपट व्यवहार, सरल व ईमानदार स्वभाव का उपहास करेगी। 'आत्मकथा' में उनके साथ दूसरे लोगों द्वारा किए गए छल-कपट का भी रहस्योद्घाटन होगा जिसे वह नहीं करना चाहते। यही सब बातें उनके संकोच का कारण हैं।

प्रश्न 9 : कवि जयशंकर प्रसाद ने आत्मकथा न लिखने के लिए क्या-क्या कारण गिनाए हैं? किन्हीं तीन का उल्लेख करें।

***अथवा* 'आत्मकथ्य' कविता में कवि जययशंकर प्रसाद ने अपनी कथा न कहने के क्या कारण बताए?**

उत्तर : (i) संसार में ऐसे संवेदनहीन लोगों की कमी नहीं है, जो दूसरों के दुःखों का मज़ाक उड़ाते हैं। कवि का जीवन भी अनेक दुःखों से भरा है और वह उनका मज़ाक नहीं बनने देना चाहता।

(ii) कवि का जीवन एक सामान्य व्यक्ति का सामान्य जीवन ही है, जिसमें न अधिक रोचकता है और न ही किसी को प्रेरित करने की क्षमता।

(iii) कवि अपने साथ छल-कपट करने वाले लोगों का रहस्योद्घाटन नहीं करना चाहता, इससे कवि की सहृदयता कम होगी, जिसे वह कम करना नहीं चाहता।

प्रश्न 10 : 'आत्मकथ्य' कविता में आई पंक्ति 'थकी सोई है मेरी मौन व्यथा' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत काव्य-पंक्ति से आशय यह है कि कवि अपने जीवन में वेदनाओं को सहते-सहते थक चुका है। अब वह अपनी वेदनाओं को मौन ही रखना चाहता है; क्योंकि उसकी वेदना अब अतीत बन चुकी है और वह अपने अतीत को कुरेद कर पुनः दुःखी होना नहीं चाहता।

प्रश्न 11 : "कविता में एक तरफ़ कवि द्वारा यथार्थ की स्वीकृति है तो दूसरी तरफ़ एक महान् कवि की विनम्रता भी।" इस कथन के पक्ष में अपनी राय लिखिए।

उत्तर : कवि के मित्रों ने जब कवि से आत्मकथा लिखने के लिए कहा तो उसने जहाँ ईमानदारी से अपने जीवन के घोर अभाव और यथार्थ को स्वीकार किया, वहीं उसने अपने जीवन में कोई महान् उपलब्धि न होने की बात कहकर अपनी विनम्रता का परिचय दिया है।

प्रश्न 12 : 'तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे-यह गागर रीती' इस पंक्ति में समाज के लोगों की किस मानसिकता या प्रवृत्ति की ओर संकेत हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति लोगों की उस मानसिकता की ओर संकेत करती है, जिसमें लोग सामान्यतया दूसरों के बारे में ही सुनना और जानना चाहते हैं। जिन लोगों के अपने जीवन में कोई बड़ी उपलब्धि होती है या उन्होंने कोई महान् कार्य किया होता है तो उसे सुनकर वे उससे प्रेरणा ग्रहण करते हैं और जिनके जीवन में कोई उपलब्धि नहीं होती है, उनके विषय में विभिन्न प्रकार की निंदा करके वे सुख का अनुभव करते हैं। कवि यह बताना चाहते हैं कि मेरे जीवन की गगरी में कोई उपलब्धि नहीं है, फिर मैं अपने अभावों को कहकर लोगों के निंदा सुख का साधन क्यों बनूँ।

प्रश्न 13 : कवि जयशंकर प्रसाद ने चाँदनी रातों की गाथा को उज्ज्वल क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कवि जयशंकर प्रसाद ने चाँदनी रातों की गाथा को उज्ज्वल इसलिए कहा है; क्योंकि तब उसकी प्रियतम उसके साथ थी और उन रातों में हँसते-खिलखिलाते हुए प्रिया के साथ मधुर बातें होती थीं। वास्तव में सुख के वे पल उसके जीवन के उज्ज्वल पक्ष हैं।

प्रश्न 14 : अपनी बात कहने की अपेक्षा प्रसाद क्या करना अधिक उपयुक्त मानते हैं? 'आत्मकथ्य' कविता के आधार पर लिखिए।

(CBSE 2015, 16)

उत्तर : अपनी बात कहने की अपेक्षा प्रसाद संसार के उन महान् व्यक्तियों की कथाएँ कहना अधिक उपयुक्त मानते हैं, जिनसे लोग प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

प्रश्न 15 : 'आत्मकथ्य' कविता में एक स्थान पर 'विडंबना' शब्द आया है। इसका प्रस्तुत कविता में क्या अर्थ है? *(CBSE 2016)*

उत्तर : प्रस्तुत कविता में 'विडंबना' शब्द का अर्थ है–दुर्भाग्य। कवि से जब आत्मकथा लिखने के लिए आग्रह किया जाता है तो वह स्वयं अपने

मन से कहता है कि यह कैसी विडंबना है कि लोग तेरी सरलता की हँसी उड़ाने के लिए मुझसे उसके विषय में सुनना चाहते हैं। भला मैं तेरी सरलता की हँसी उन्हें कैसे उड़ाने दे सकता हूँ। ऐसा करके तो मैं स्वयं अपनी ही हँसी उड़ाऊँगा, जो मैं नहीं कर सकता।

प्रश्न 16 : 'आत्मकथ्य' कविता में जीवन के किस पक्ष का वर्णन किया गया है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : 'आत्मकथ्य' कविता में कवि ने अपने जीवन के यथार्थ और अभावग्रस्त पक्ष का वर्णन किया है। उसका जीवन खाली गागर के समान है, जिसमें कोई उपलब्धि नहीं है। उसे जीवन में वह सुख प्राप्त नहीं हुआ, जिसका स्वप्न देखकर वह सोते से जाग गया था। उसके जीवन में सुख के स्थान पर दुःख अधिक हैं, जिनको वह किसी के साथ नहीं बाँटना चाहता।

प्रश्न 17 : मुरझाकर गिर रही पत्तियों से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर : मुरझाकर गिर रही पत्तियों के द्वारा कवि कहना चाहता है कि इस संसाररूपी वृक्ष की आशारूपी अनेक पत्तियाँ असमय ही विभिन्न झंझावातों के कारण गिर जाती हैं, जिस कारण इसका सौंदर्य पूर्ण नहीं हो पाता है। मैं स्वयं भी इसी वृक्ष की पत्ती हूँ और पता नहीं कब टूटकर गिर जाऊँ। जब मेरे जैसी दूसरी असंख्य पत्तियों की कथा नहीं लिखी गई, तब मुझे अपनी कथा लिखना उचित प्रतीत नहीं हो रहा।

प्रश्न 18 : 'आत्मकथ्य' कविता की पंक्ति–''यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।''– का भाव अपने शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2023)***

उत्तर : इस पंक्ति का भाव यह है कि कवि अपनी सरलता और सज्जनता के कारण दूसरों द्वारा ठगा गया है। आत्मकथा लिखने में उसे यह सब बताना पड़ेगा। इससे लोग उसकी सरलता का उपहास करेंगे। कवि अपनी सरलता और सज्जनता का उपहास नहीं कराना चाहता, क्योंकि सरलता का उपहास एक विडंबना है; इसलिए वह आत्मकथा नहीं लिखना चाहता।

प्रश्न 19 : जीवन की किन बातों का उल्लेख कवि दूसरों से नहीं करना चाहता?

उत्तर : कवि अपने जीवन की भूलों और प्रवंचनाओं का उल्लेख दूसरों से नहीं करना चाहता। कवि अपने जीवन के उन सुखद और मधुर क्षणों की गाथा भी किसी के सामने नहीं गाना चाहता, जो उसके आज के दुःखों का कारण बन गए हैं। अथवा जिन सुखद पलों की स्मृति आज उसके मन को पीड़ा पहुँचाती है, वह उनका भी उल्लेख नहीं करना चाहता।

प्रश्न 20 : 'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की'–कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की' कथन के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि उसके जीवन में सुख के भी दिन आए थे, जो मधुर चाँदनी रातों के समान मधुमय थे। मैं उन्हें किस प्रकार किसी को सुना सकता हूँ; क्योंकि वे क्षण तो नितांत एकाकी होते हैं, उनकी गाथा नहीं गाई जा सकती है।

प्रश्न 21 : 'आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरणसहित लिखिए।

उत्तर : 'आत्मकथ्य' कविता की भाषा संस्कृतनिष्ठ एवं भावानुकूल है। इसमें अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है। संगीतात्मकता एवं लाक्षणिकता इस कविता की अन्य मुख्य विशेषताएँ हैं।

प्रश्न 22 : इस कविता के माध्यम से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : 'आत्मकथ्य' कविता के माध्यम से कवि जयशंकर प्रसाद जी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि वे अत्यंत उदार, विनम्र, निरभिमानी और सरल स्वभाव के व्यक्ति थे, इसीलिए तो वे अपनी आत्मकथा लिखकर स्वयं को महिमामंडित नहीं करना चाहते। अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की प्रवृत्ति से वे कोसों दूर हैं। अपनी दुर्बलताओं को दूसरों के सामने कहकर वे उपहास का पात्र नहीं बनना चाहते; अतः हम यह कह सकते हैं कि प्रसाद जी संकोची और अंतर्मुखी थे। उनकी उदारता और सरलता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि जीवन में उनकी सरलता का लाभ उठाकर जिन लोगों ने उनके साथ छल-कपट किया, वे आत्मकथा लिखकर उनका कच्चा चिट्ठा भी नहीं खोलना चाहते। प्रेम-संबंधों को वे नितांत व्यक्तिगत थाती के रूप में मानते हैं, जिनको वह दूसरे लोगों के साथ बाँटने को अनुचित मानते हैं, इससे उनके प्रेम की पवित्रता भी ध्वनित होती है।

प्रश्न 23 : आप किन व्यक्तियों की आत्मकथा पढ़ना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर : आधुनिक भारतीय महापुरुषों में हम महात्मा गांधी, पं० जवाहरलाल नेहरू, रवींद्रनाथ टैगोर, राजेंद्रप्रसाद और पौराणिक महापुरुषों के रूप में उपन्यास के रूप में प्रस्तुत कर्ण और कुंती की आत्मकथा को पढ़ना चाहेंगे। वर्तमान महापुरुषों में ए० पी० जे० अब्दुल कलाम की आत्मकथा हम पढ़ना चाहेंगे। विदेशी महापुरुषों में अब्राहम लिंकन, मार्टिन लूथर किंग और नेल्सन मंडेला की आत्मकथाएँ हम पढ़ना चाहेंगे; क्योंकि हम इनकी आत्मकथाओं के माध्यम से यह सीख सकेंगे कि विषम परिस्थितियों में रहकर भी कैसे सफलता प्राप्त की जा सकती है। अपने देश, जाति और समाज का कल्याण हम किस प्रकार करके अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं, इसकी प्रेरणा भी इनकी आत्मकथाओं से प्राप्त हो सकती है।

प्रश्न 24 : 'आत्मकथ्य' कविता का प्रतिपाद्य विषय क्या है?

उत्तर : 'आत्मकथ्य' कविता छायावादी शैली में लिखी हुई है। इस कविता में जयशंकर प्रसाद ने जीवन के यथार्थ एवं अभाव पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। छायावादी सूक्ष्मता के अनुरूप ही अपनी प्रियतमा की स्मृतियों के माध्यम से परमब्रह्म परमात्मा के प्रति आत्मा की तड़प को व्यक्त किया है। अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने के लिए कवि ने ललित, सुंदर, नवीन शब्दों एवं बिंबों का प्रयोग किया है। इन्हीं शब्दों और चित्रों के सहारे उन्होंने बताया है कि उनके जीवन की कथा एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की कथा है। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे महान् और रोचक मानकर लोग प्रशंसा करेंगे। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि इस कविता में एक ओर कवि द्वारा यथार्थ की स्वीकृति है तो दूसरी ओर एक महान् कवि की विनम्रता भी।

प्रश्न 25 : बिना ईमानदारी और साहस के आत्मकथा नहीं लिखी जा सकती। गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' पढ़कर पता लगाइए कि उसकी क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर : ईमानदारी और साहस किसी भी आत्मकथा की श्रेष्ठता की कसौटी हैं; क्योंकि कोई आत्मकथा तभी दूसरों के लिए उपयोगी और प्रेरणादायी हो सकती है, जब व्यक्ति अपनी बुराइयों और चारित्रिक दुर्बलताओं को पूरी ईमानदारी और साहस से प्रस्तुत करके यह बताए कि उसने किस प्रकार से इनके बीच से होकर अपनी जीवनयात्रा को सुगम और सफल बनाया। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में अपनी दुर्बलताओं को पूर्ण ईमानदारी और साहस के साथ प्रस्तुत किया है; जैसे–उन्होंने बचपन में मांस-भक्षण, धूम्रपान और चोरी करने की बातों को पूरी ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। इससे उनकी सत्य के प्रति निष्ठा का पता चलता है। अपनी गलतियों को स्वीकार करने में उन्होंने कभी संकोच नहीं किया, इसीलिए उन्होंने अध्यापक के कहने पर

भी दूसरे छात्र की कापी से नकल करके उस शब्द को ठीक करके नहीं लिखा, जो उन्हें आता ही न था। अपनी गलतियों को एक पत्र पर लिखकर उन्होंने अपने पिता को सौंप दिया था और उनके लिए उनसे क्षमा भी माँगी थी। उनके पिता ने भी उनको क्षमा कर दिया था, इससे यह स्पष्ट होता है कि यदि व्यक्ति अपनी गलतियों को स्वीकार कर ले तो उसे अपने जीवन में उनको सुधारने का अवसर अवश्य मिलता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में ईमानदारी, साहस, सत्यनिष्ठा, उदारता, स्पष्टता आदि विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं।

प्रश्न 26 : प्रसाद जी के काव्य की कलागत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : प्रसाद जी को छायावाद का जनक कहा जाता है। उनके काव्य में छायावादी काव्य की सभी विशेषताएँ दिखाई देती हैं, जिनका संक्षिप्त वर्णन हम निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर कर सकते हैं–

(i) संस्कृतनिष्ठ और भावानुकूल भाषा–प्रसाद काव्य की भाषा प्रायः संस्कृतनिष्ठ है। इसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया गया है। मधुप, अनंत-नीलिमा, मलिन, उपहास, प्रवंचना, अरुण-कपोल, स्मृति, पाथेय आदि कुछ ऐसे ही तत्सम शब्द हैं। उनके काव्य में सर्वत्र भावानुकूल सुसंगठित शब्द-योजना दिखाई देती है। 'आत्मकथ्य' का उदाहरण देखिए–

तब भी कहते हो–कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे–यह गागर रीती।

(ii) अलंकार-विधान–प्रसाद जी ने पाश्चात्य साहित्य के मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय जैसे अलंकारों के साथ परंपरागत अलंकारों का भी प्रयोग किया है; जैसे–

अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में। – मानवीकरण
मधुप गुन-गुना कर कह जाता है – रूपक
तुम सुनकर सुख पाओगे – अनुप्रास

(iii) संगीतमयता–प्रसाद जी भावुक कवि हैं। भावावेग के समय उनके कंठ से निकलने वाली कविता पूर्णतः गेय और संगीतात्मक है। पठित कविता 'आत्मकथ्य' भी संगीतात्मकता के गुण से समंवित है।

(iv) लाक्षणिकता–छायावादी काव्य में लाक्षणिकता के द्वारा प्रकृति के माध्यम से अव्यक्त सत्ता का वर्णन किया जाता है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रणेता के रूप में जाने जाते हैं; अतः उनके काव्य में लाक्षणिकता का समावेश स्वाभाविक रूप में दृष्टिगत होता है; यथा–

मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।

अंत में हम कह सकते हैं कि छायावादी कविता की अतिशय काल्पनिकता, सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण, प्रकृति-प्रेम और शैली की लाक्षणिकता उनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

1. 'उज्ज्वल गाथा' का आशय है–
(क) सुखद बातें (ख) दुःखद बातें
(ग) नीरस बातें (घ) कड़वी बातें।

2. कवि किसकी उज्ज्वल गाथा गाने में असमर्थ है–
(क) अपने देश की (ख) अपने परिवार की
(ग) अपने पूर्वजों की (घ) मधुर चाँदनी रातों की।

3. कवि ने किसका स्वप्न देखा था–
(क) प्रिय-मिलन के सुख का
(ख) धन-प्राप्ति के सुख का
(ग) पुत्र-प्राप्ति के सुख का
(घ) सफलता-प्राप्ति के सुख का।

4. कवि के आलिंगन में आते-आते कौन भाग गया–
(क) पुत्र (ख) मित्र
(ग) सुख (घ) भाई।

5. कवि के अनुसार विडंबना क्या है–
(क) मित्रों का उपहास करना
(ख) सरलता की हँसी उड़ाना
(ग) मूर्खों की हँसी उड़ाना
(घ) आत्मकथा न लिखना।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. 'आत्मकथ्य' कविता के कवि का नाम है–
(क) ऋतु राज (ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) मंगलेश डबराल (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'।

7. कविता में थका हुआ पथिक कौन है–
(क) कवि (ख) कवि के मित्र
(ग) कवि की प्रेमिका (घ) इनमें से कोई नहीं।

8. आत्मकथाओं का संसार में क्या परिणाम हुआ है–
(क) उनकी प्रशंसा की गई है
(ख) उनसे प्रेरणा ली गई है
(ग) उनका उपहास किया गया है
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

10. 'आत्मकथ्य' कविता में आई पंक्ति 'थकी सोई है मेरी मौन व्यथा' का आशय स्पष्ट कीजिए।

11. जीवन की किन बातों का उल्लेख कवि दूसरों से नहीं करना चाहता?

12. प्रसाद जी 'आत्मकथ्य' में संकोच के शिकार क्यों हैं?